आपातकाल में सृजन फुलवारी

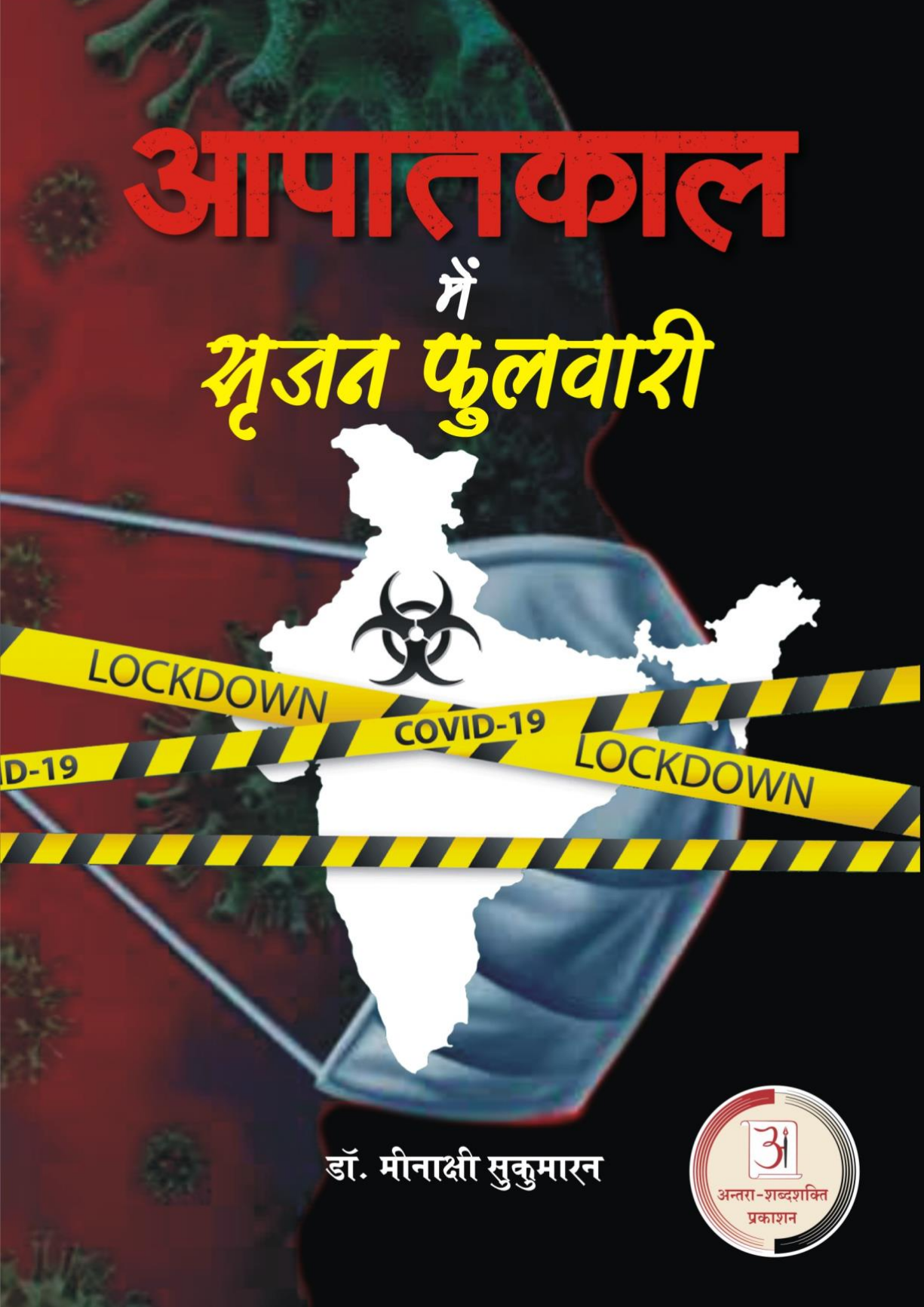

डॉ. मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-142-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, **मीनाक्षी सुकुमारन**

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MEENAKSHI SUKUMARAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	ज़िन्दगी कुछ इस तरह से जीती हूँ	6
2.	बारिश के बाद	7
3.	रंगोली	8
4.	कन्या पूजन	9
5.	उलझन	10
6.	पदचाप	11
7.	लॉक डाउन	12
8.	मिसाल	13
9.	सुख का सूरज फिर निकलेगा	14
10.	वो सुबह कभी तो आएगी	15
11.	अवकाश	16
12.	समय का फेर	17
13.	नज़ारा	18
14.	क्यों आया तू देश हमारे	19
15.	न्याय	20
16.	दूरियाँ भी नज़दीकीयाँ सी	21

ज़िन्दगी कुछ इस तरह से जीती हूँ

सुनती हूँ सबकी, करती मन की
दुखे न दिल मुझ से कोई
नम न आँख हो मुझ से कोई
इसलिए अक्सर रहती बस खामोश
और रह जाती बात दिल की दिल में ही
करती यत्न बस इतना, ज़िन्दगी हो छल झूठ से परे
सच और सच्चाई से रहे
महकता दिल और घर आँगन
नहीं आता कपट, नहीं आता चलना चालें
इसलिए अक्सर खा जाती हूँ मात
बनते बिखरते रिश्तों से, अपनी सुविधा अनुसार
रोता है तड़पता है दिल
पर लगा देती हूँ मरहम, उस पर फिर धैर्य की
यूँ जीती हूँ अपनी ज़िन्दगी कुछ इस तरह
सुनती सबकी करती मन की
न बदलती, न बहलती बातों के ताने बानों से
माना दिल मासूम है मेरा
पर दिया नहीं हक, कभी किसी को इस से खेलने का
माना सच है ढाल इसकी
दिखती बहुत कमज़ोर हूँ, पर निश्चय की पक्की हूँ
मन की सच्ची हूँ
ज़िन्दगी कुछ इस तरह से जीती हूँ
रोज़ आईने में जब खुद को देखूँ
तो कभी चुरानी न पड़े नज़र, खुद से ही खुद की कभी भी।

बारिश के बाद

बारिश के बाद
कभी तो होती
महक सौंधी मिट्टी की
कभी हरे पत्तों
पर चमकती बूंदे ओस सी
कभी फूलों की महक
लगे सारी फ़िज़ा महकती सी।
बारिश के बाद
कभी होती उमस
इतनी की तप उठे तन मन
निकले ऐसी ऊष्मा धरती से।
बारिश के बाद
कभी हों मंज़र इतने भयावह
कहीं बाढ़
कहीं टूटे मकान
कहीं लापता ज़िंदगियाँ
बस दिखते बर्बादी के निशाँ।
बारिश के बाद
कभी है खुशी
तो कभी गम
कभी सुहाना
कभी तपाता
कभी लुभाता
कभी सताता
कभी मन भरमाता
कभी मन रुलाता।

रंगोली

कभी खुशी
कभी गम
कभी सहेली
कभी पहेली
कभी अपनी
कभी परायी
कभी पास
कभी दूर
कभी बसंत
कभी पतझड़
कभी नमी
कभी तपिश
कभी खिलती
कभी मुरझाती
कभी प्यार
कभी टकरार
कभी मिलन
कभी जुदाई
यूँ कितने ही
भाव भरे रंगों से सजी है
ये जीवन की रंगोली।

उलझन

है उलझन बड़ी
इस दिल की
कैसे मेल खाये
मौसम से बदलते लोगों से
जो आएं बन बसंत
दे जाएं पतझड़ सी सूखी यादें
जो आएं बन तपिश
दे जाएं सर्द सी सरसराहट
जो आएं बन सावन
दे जाएं बस नमी अखियों में
यूँ पल पल बदलते
रिश्ते रुलाते हैं मन
भर पीड़ा जीवन में
है उलझन बड़ी
क्यों पहेली सी
ज़िन्दगी यूँ छले
ला सामने रिश्ते
ऐसे जो पहले लुभायें
फिर दें चोट गहरी
न कोई आर
न कोई पार
न कोई थाह
बस बेपरवाह से
उलझे-उलझे से ये रिश्ते
मौसम से बदलते, छलते।

कन्या पूजन

कितना पावन लगता आते जब नवरात्रे
करते घर घर सब पूजा माँ दुर्गा की
होती फिर जब कन्या पूजन
घर घर महक उठती गूंज नन्ही नन्ही कंजकों की
पूजा जाता उनको धोकर चरण उनके
लगा रोली टीका, बांध मौली, खिला पूरी, छोले, हलवा
कितना पावन और मनोरम होता
ये दृश्य मन को देता सुकून।
पर जब आता फिर ख्याल उन मासूम कलियों का
जो मार दी जाती कोख में ही
या होता शोषण उनका बेदर्दी से
तब क्यों मर जाती है आत्मा लोगों की जो बनाते शिकार
अपनी हवस का मासूम बच्चियों, बहनों और बेटियों को
या करते प्रताड़ित चढ़ा घरेलू हिंसा की बलि
क्या सिर्फ पूज्य है माँ और कन्याएं सिर्फ नवरात्रों में ही?
क्यों नहीं मिलता मान सम्मान, संरक्षण सदा उन्हें?
क्यों समझ खिलौना खेला जाता उनकी इज़्ज़त से?
यदि पूज्य हैं वो नवरात्रि में तो पूज्य हैं हर रोज़ भी
रखना होगा याद इसे हमेशा
ताकि महक खिल सके नन्ही
कलियां जो महकाती घर आँगन हमारा
तभी सफल है कन्या पूजन
वरना सब व्यर्थ है।

पदचाप

पदचाप जो बदल गयी
है तेज़ रफ़्तार में
पूरे विश्व पर ढा रहा कहर
मौत ही मौत
आँसू ही आँसू
देता दस्तक यूँ शहर- शहर
क्या अमेरिका, क्या इटली, क्या ब्रिटेन
हर जगह मचा ये कोहराम
धीरे सी दी थी दस्तक
इसने देश में अपने
और देखते ही देखते
रोज़ बढ़ रहे आंकड़े
आखिर क्या सितम
ढायेगा ये भयंकर संक्रमण
जो पूरे विश्व पर हो रहा भारी
क्या आम क्या खास
हर कोई हो रहा इसका शिकार
न देखे ये अमीर या गरीब
न किसी का धर्म
बस मौत का तांडव मचा है हर दिशा
जाने कब और कैसे
थमेगा ये सिलसिला
जो महामारी से बन गया है
सिर्फ आंकड़ों और मौत का तूफान।

लॉक डाउन

लॉक डाउन में जहां
सीमित आयमो में सिमटे आप और हम
फिर भी अच्छे से गुज़र बसर कर
जी रहे अपनी अपनी ज़िन्दगी
वहीं खेतों में खड़ी फसलें, देख रो रहा किसान
छूटी मज़दूर की ध्याड़ी
काम और घर दोनों से हुए बेदखल गरीब बेचारे
एक तरफ महामारी का खौफ
तेज़ी से बढ़ते आंकड़े
और उतनी ही तेज़ी से
बढ़ती मजबूरियां किसानों और मजदूरों की
सब तरफ पसरा है खौफ
उदासी, लाचारी, सूनापन
कोई करे भी तो क्या करे
हर सुबह उदास, हर दिन खाली, हर रात भारी
आया ये वक्त कैसा हुए सब बेबस।।
अपने अपने घरों में बंद त्योहार भी हुए
सब सूने सूने
न मंदिर, न गुरुद्वारा, न गिरजाघर, न मस्जिद
न गंगा स्नान
सभी तीर्थ पूजा स्थल बने घर आँगन
जान है तो जहान है का नारा ये बुलंद अब हुआ
हो मुश्किल कितनी भी जीना होगा यूँ बंदिशों में
कर तपस्या रहने को जीवित और रखने को दूर खुद से
इस भयंकर महामारी के संक्रमण से।

मिसाल

आम बनना तो बहुत ही आसान है
पर एक मिसाल बनना बहुत ही मुश्किल
एक तपस्या है, एक यज्ञ है
एक कठिन चुनौती है
जिस में हर मोड़ पर न जाने कितने अवरोध
कितने अपमान, कितनी तीखी बातें,
कितने विरोध का सामना करना पड़ता है
ये वो अग्निपथ है जिस पर चल कर
आपको कुंदन बनना पड़ता है
ऐसी ही मिसाल कायम की है
हमारे देश के प्रधानमंत्री ने
जिन्होंने करोना जैसे संकट से
देश और देशवासियों को ऐसे संभाल रखा है
जो किसी भी देश या राष्ट्र
का मुखिया नहीं कर पाया
अपनी रात रात की नींद गंवा
अपना सुबह दिन का चैन गंवा
सबसे सबकी खबर ले
अनुसरण करना जो देश और लोगों के हित में हो
फिर चाहे वो देश भर के
राजनेताओं से हो, अध्यक्षों से, मीडिया कर्मी, डॉक्टरों,
हर किसी से बातचीत के तार जोड़े रखना
ताकि कहीं कोई भी चूक न हो जाये
ये अपने आप में ही एक मिसाल है
जो इतने बड़े संकट में देश का सबसे बड़ा संबल है।।

सुख का सूरज फिर निकलेगा

माना है सुबहें उदास
दिन भारी, रातें खौफ़जदा
हर तरफ पसरा सूनापन
हर ओर बस सन्नाटा
सब सिमटे घर की चार दिवारी में
नहीं लांघनी लक्ष्मण रेखा
बंद सभी कपाट धार्मिक स्थलों के
न बच्चे जाते स्कूल, न कोई जाता ऑफिस
न ही कोई अन्य काम, सब हुए बस नज़रबंद
यूँ घरों में अपने अपने, न चलता कोई वाहन
न खुलते कोई बाज़ार, सब हुआ यूँ सूना सूना
मानो थम सी ही गयी हो ज़िन्दगी सभी की
ऊपर से डराते सहमाते, मौत के आंकड़े जिस से
जकड़ा विश्व पूरा
देश के देश हो रहे हताहत इस संकट से
क्या छोटा क्या बड़ा, बचा न कोई भी इस से
अपने देश में धीरे धीरे
पसार रहा ये पैर हर राज्य, हर नगर, हर शहर
यूँ बेबस सा लगता येनज़ारा
कभी डराता कभी दिल दुखाता
फिर भी है यकीन
सुख का सूरज फिर निकलेगा
होगी वही चहक महक हलचल
चल पड़ेगी ज़िन्दगी फिर से अपनी गति
जो पड़ी है रुकी-रुकी, थमी-थमी, डरी-डरी।

वो सुबह कभी तो आएगी

वो सुबह कभी तो आएगी
जब सुबह फिर से होगी चहल पहल पहले जैसी
कोई अपनी सैर को जाता, कोई दूध, सब्ज़ी लेने
कोई बच्चे को स्कूल छोड़ने, कोई अपने अपने कामों पर
वो सुबह कभी तो आएगी

जब न होगा खौफ घर से बाहर निकलने का
जब न होगा डर कोरोना से शिकार होने का
जब न होगा कोई समाचार इसके बढ़ने का
न फैलने का, न मौत का
वो सुबह कभी तो आएगी

जब ज़िन्दगी एक बार फिर होगी पहली सी बेफिक्र
न डरी, न सहमी, न सिमटी,
बस खिलखिलाती, मुस्कुराती, चलती, फिरती, दौड़ती
वो सुबह कभी तो आएगी

जब छट जाएंगे ये सारे अनिश्चिताओं के बादल
न कोई डर, न कोई खौफ,
बस बेफिक्र जिएंगे सब पहले जैसे
मंदिरों में बजेगी घंटी, गुरद्वारों में होगी अरदास
मस्जिदों में आज़ान, गिरजाघरों में प्रार्थना
सड़क पर चहल पहल
रुकी सी ज़िन्दगी फिर चल पड़ेगी
वो सुबह कभी तो आएगी

अवकाश

कभी तरसा करते थे
मिले अवकाश
तो ये करेंगे वो करेंगे
पर अब जब मिला
अवकाश ऐसा जिस में
सारा दिन खत्म होता नहीं
काम घर के
कुछ पल बीच में मिल जाएं
तो हो जाती एक आध बाज़ी
रम्मी की या कैरम बोर्ड या तंबोला
बस इसी तरह ये दिन अवकाश के बीत रहे घर में।
अवकाश है ये बड़ा भारी
जहां उत्साह से ज़्यादा रहता डर देख देख बढ़ते आंकड़े
कोरोना संक्रमण के
देश दुनिया के
अजीब सा डर रहता घेरे मन के कोने।
अवकाश तो है
पर अनचाहा
जहाँ न चैन न सुकून
बस बेनाम सा तनाव और खौफ
सब साथ हैं फिर भी
रहता खालीपन और उदासी।

समय का फेर

समय ने चली ये कैसी उल्टी चाल
कैद हुए इंसा घरों में
और स्वछंद घूम रहे जानवर
कहीं नील गाय, कहीं पेंगुइन्स,
कहीं हाथी, कहीं हिरण,
कहीं बतखें बड़े आराम से
हुआ अजब समय का फेर
इंसा बंद हुए घरों में अपने
महामारी के चलते
और पंछी, जानवर ले रहे
मज़ा खुले वातावरण का
सालों से गंदी हो चुकी
नदियां भी बहने लगी
कल कल हो साफ बिल्कुल
चाहे हो गंगा, यमुना व अन्य नदियाँ
पर्यावरण हुआ साफ
सिर्फ एक लॉक डाउन ने
कर डाले यूँ चमत्कार कई
शायद अपना तरीका है
प्रकृति का इंसा को परख
यूँ कर कैद घरों में अपने
ली समय न करवट कैसी
हुआ सब कुछ उल्टा पुल्टा
इंसा कैद घरों में, पंछी जानवर उन्मुक्त
कर रहे सैर मन मुताबिक।।

नज़ारा

कैसा अदभुत
नज़ारा था
जब हर घर की
मुंडेर, छत और आँगन
में दीपों और मोमबत्तीयों
की कतारें जगमगा रही थीं
यूँ हर ओर प्रकाश देख
आभास हो रहा था
करोना रूपी अंधकार
हम सबकी ज़िन्दगीयों
से विदा हो रहा हो
और जल्द ही पूरा देश
पूरा विश्व फिर से उभर
पायेगा रोज़ डराते सहमाते
मौत के आंकड़ों से
एक उम्मीद एक आस्था सी
मन को जगमगा रही थी
दीपों और मोमबत्तीयों की
लौ से
बस सुकून भरी मुस्कानें
ज़्यादा दूर नहीं।।

क्यों आया तू देश हमारे

करोना क्यों आया तू देश हमारे
हुए बंद सब घरों में, लगे तले बाजारों में
बंद हुए द्वार मंदिर, मस्ज़िद, गुरद्वारों के
सूनी हुईं गलियां, सूनी हुईं सड़के
करोना क्यों आया तू देश हमारे
की साज़िश या लापरवाही
चीन ने ऐसी ले लिया चपेट में पूरे विश्व को अपने
इस भयानक संक्रमण ने
मौत का तांडव मचा ऐसा, हर देश रह गया बेबस
करोना क्यों आया तू देश हमारे सताने ऐसे
लगा लॉकडाउन ऐसा
हो गये पलायन को मजबूर कितने ही लोग
भूखे प्यासे हो घर से बेघर काम काज से बेदखल
न कोई साधन, न कोई वाहन
बस पैदल नापते कदमों को
पहुंचने को अपने गांव शहर
करोना क्यों आया तू देश हमारे
करने उथल पुथल यूँ ज़िन्दगीयों को
हुए नज़रबंद सब अपने ही घरों में
रुक सके बढ़ने से संक्रमण इसके
माना है डगर मुश्किल
पर अपने अपने हिस्से की
ईमानदार कोशिश तो करनी ही होगी बन नायक
इस विश्व युद्ध पर फैली महामारी को हराने की
करोना क्यों आया तू देश हमारे.....।।

न्याय

एक माँ जिसने मानी न हार
जूझती रही पूरी हिम्मत से
न ही टूटी
न छोड़ा हौंसला
मिलती रही तारीख पे तारीख
पूरी निष्ठा से लड़ी लड़ाई
दिलाने को इंसाफ उन दरिंदों को
जिन्होंने छीन ली थी मासूम लड़की
कर उसकी इज़्ज़त तार-तार
आज मिला सुकून
निर्भया की आत्मा को
और माँ के कलेजे को
भी जब सालों से टलती
फांसी की सज़ा
आज आखिरकार मिल ही गई
चारों गुनहगारों को
ऐसा ही अंत होना चाहिए
हर उस वहशी का जो
समझते हैं औरत की
इज़्ज़त को खिलौना
फांसी की सज़ा
हो हर उस वहशी को
यही दुआ है ताकि
रुक सके ये वहशी वार
मासूम बच्चियों, बेटियों, बहनों पर।।

दूरियाँ भी नज़दीकीयाँ सी

दूरियाँ भी नज़दीकीयाँ सी
लगती जब दिल से दिल
हो जुड़ें
मौसम हो मिलन का या
जुदाई का
होठों पर हो मुस्कान या
आँखों में नमी
दूरियाँ भी नज़दीकीयाँ सी
लगती जब दिल से दिल
हो जुडें
है चाहत बड़ी जो भर देती
खालीपन जुदाई का दूरी में भी
हम तुम जब एकदूजे को
देख लेते मोबाइल पर भी
तो हर दूरी सिमट जाती
बन नज़दीकीयाँ
ऐसा है जादू ये दिल से
दिल के मिलन का अपना।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

डॉ. मीनाक्षी सुकुमारन

नोएड़ा (उ.प्र.)

E-mail - virgo67@ymail.com

Mobile - 9810862418

एक और जहां लॉकडाउन की स्थिति से मन खिन्न और उदास है वहीं घर की पूर्ण जिम्मेदारी भी आ गयी है चूल्हा चौका से सफाई, बर्तन, झाड़ू-पोछा आदि जो की नियमित दिनचर्या में नहीं करने पड़ते थे। सिर्फ एक खाना पकाने का काम या छोटा मोटा कोई और काम जैसे बाजार से खरीदारी आदि होता था। लेकिन अब एकदम से सारा ही काम सिर पर पड़ जाने से पूरे दिन की व्यस्तता बंध गयी है ऐसे में सृजन हेतु समय निकालना मुश्किल तो होता है पर लिखने को प्रेरक मन कुछ पल चुरा ही लेता है अपनी मन की बात कहने को।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-142-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/